

॥ १३ ॥ इति रहो वायुः सप्त वाता प्रकीर्तिताः ॥ १३ ॥ आक शराग्नि संयुक्तो वेदे नैवावसेषितः ॥ आ
 वने संवर्तकश्च पुष्परेदो रणमददं ॥ १४ ॥ आ वने नि । त्रलो मेघ संवर्ते वायु रुद्र मे ॥ पुष्परेडु सुग वं विद्रो
 सत्य वनि महि ॥ १५ ॥ जुग्मा जगो मी नगते ससां के र विर्यदा कर्कट कं प्रयाति ॥ जलं शतां ह हरिका उके
 र्दं पुक्तं हि क न्याम गयोरसीति ॥ १६ ॥ कुलीर कुंभा लि तुला गने नैव जे द्वेष सम वति सदा नीम ॥ ससुंद
 द्वा भागाश्च षड् भागाश्चैव पर्वते मे पथिव्यं वतु रो भागा सम्यग्वर्षेति वासव ॥ दस योजन न विस्तीर्ण
 शत योजन मायनं ॥ १७ ॥ आठ कंतु विजानी मादे न वर्षेति वासव ॥ गुरो न गुरि न शं कं स प्र प्रि
 मी गमा हरेत् ॥ १८ ॥ शेषं यमा हतं कृत्वा यं वत त्राणि योजयेत् ॥ यथा शाकं तथा लक्ष्मः यः शेषं पूर्व श

भास्य

ASHA ARCHIVES

ASHA ARCHIVES

2405

११
नीर

षवत् ॥ २० ॥ मेघावायंत रां वैवसी तरोद्रसमीरगाः ॥ प्रजानं च तथा वृद्धिसेयोश्च न पविग्रहा ॥
२१ ॥ एते न वसमाख्यातं स्वं शाकादृतो मुहुः ॥ शाको वेदेष्टु शाने पर्वते भोगमा हरेत् ॥ २२ ॥
दिघोत्रये रासं यो ज्ञ सुधाद्या क्रमं सा भवेत् ॥ सुधातवा तथा निद्रा आलस्यो घमयं वर ॥ २३ ॥
सो ११ गोरस १२ श्वेव पाप १३ पुरा १४ श्वत्पुशा ॥ १४ ॥ विजु सादितु
पुष्कार मज्जिनी सपु गराप विषये प समजित ॥ अपिरे धमवला कर्म
वैद सपु जितितं शुभम ॥ २४ ॥ अभिर वेद पुरा पवति

७२

शांति कोत्तथालो न उत्साह स्वतथाद स ॥ १३ ॥ निरस्व गोर सैव पाप पुराप चतुर्द
स ॥ २४ ॥ वृ क माल न प काल मज्जिनिः ३ सपु गराप विषये द स मज्जित ॥ अदि ३
स्पष्ट मवलोकै सैव देत तत्तु जनिता मुना मुने ॥ २५ ॥ अभि २ वेद ४ सर वीह ३
निर्मह जायते वलु मुनि दे मुत्त म म्ब ड विरत्त द विह र प यो धर भद्र ७ ३
पतिनि भय म्ब हत् ॥ २६ ॥ • ॥ • ॥ इति श्री पंचमि जात सारे नास्वति कर शोति
धि भ्रुवादि कारो छति यो ध्याय २ ॥ विं ३० गुरा म्ब मुषा क मासा दिने ॥ १२ ॥ सप
तारि तु वासरेन ॥ कुविन्दु मेतत्त ग न ७ तत्तु व वास भव भिप द्द मुषा दे नाठा ॥ १ ॥ च

१२

सं० १० रविवृ ३७ ग० नृत्त परसा दृष्ट ७ त क दृष्ट ७ नृत्त प व शा ५ विवाया दृष्ट
 यथा कल्पन ॥ मेधादि रातिषु पवरात ३० गुरो सु देवा नृत्त स के स सहितं भवंति सुविद्य
 त ॥ २ ॥ ७० र्य स र ७ प्रातिथ्ये प्र देवा प्रथम सता प्रा १०० क स स स स स र शो वा स नृत्त नि
 त नो ग प यो दृ ता प्रा १०० य नो न्यदि क पुर त स्यात् ॥ ३ ॥ ७० र्य स र प चा प क ५ र वि १२
 ५१४ नृपा १६ वना १७ न के दु १९ क य मा र १ जि ना स २४ स प्रा वि ना २७ स म् यु ग
 ना ३१ र सा गि ३६ अ धि ४२ स ता ना ४६ दि श रा प ७ स रा गा द ५ ॥ ४ ॥ प चा द्र यो
 ७५ व द ग जा ८४ क ता ता ९४ लि व्ये दु वो १३ ना नृ नृ वा ११२ क स र्यो १२९ ॥ ५ ॥ अ

७७

व्याधि च द्रा १२८ शर रा म च द्रा १३५ च द्रा धि च द्रा १४१ सर व जि रा स १४५
 ॥ ६ ॥ इति सूर्य ल रा डा ॥ ॥ सूर्यो न नृ गुरा क ता त द धो ज न न का लि का ॥ सूर्यो द या
 दि द्यति का वि लि व्य च ध वा पु न ७ स क मा गि कृ ट क र्यो गृ ह ता का लि का भ वे त् ॥ तो
 ग्या द्र वे स प ७ गुरा दृ ता प्रा १०० स मा नि त स्या त्पु र सूर्य भु क्ति ॥ ७ ॥ त न द ९० नि
 हा ति थ यः श श के के न्द्र स त द्रा १०० ति थ य प्र दे या ॥ के न्द्र क ता व ट सर स प द ले
 २७५ दृ शो ध्यो वि धु भा ग स रा धि ने त्रै २४५ ॥ ८ ॥ इ म् यु सु वि द्या सहित श हित स स
 क्रै १३३ च रा ऊ ना ग व न इ त स स क्ति ॥ च रा ऊ ना गो वि धु वा दि ता सै व च द्रा १ ने त्र

२६ यचं १९ वीं ॥ ९॥ पुनः प्रविष्टा गगने शुभः लब्धं शीतासु केन्द्रं तु शुभं प
त्रं शुभं सुखं च १०० राडा भोगी पूर्वो शा-धनं स्फुरतः स्यात् १० इ
इरसा दत्तं च १० जिन २४ पंचगुरा ३५ सराधि ४ दृष्टं ४
ऊनवा ९९ कटा १०० यज्ञानुवा १२६ रामसु १४३ नवाह
वा ३५ १७५ वाकं शुको १९० हिस्वाधि २०३ जात्याधि २२२ वरास
पंचाग्निद्वय २३५ गोमयमा २३९ कृमिदा २४९ नत्राधिद्वय २
ना २४३ त्रिमिदा २४३ ॥ १२॥ शुक्तिनवापा ९० नित्तभोग्यसिद्ध

चन्द्रातिथ्येन ९० शोकोनवाका ९० गगनीग द्वा निघ्न भूक्ति त राप्तावा
भवीति ॥ १३॥ शताप्त १०० तक्षे शतशो १०० धित्त श्यावथा द्वा द्वा भूक्ति द्वा ताव
ना ॥ राशीशलाका द्वा जति २५५ ल धोन क्षत्रवत्त यतिवा च शोषा ॥ १४॥ स
वरविद्योयुतित्तथयोगा सुव्यो शुभं कौरताथना ॥ अकोन चन्द्रा च सराधिहि न
तत्तवमिदा च सराधि ४५५ ल धो ॥ १५॥ शपावत्तवा करशोववा प्रोतन्दादि कायात्रिथ
येन वति ॥ पले ६ लेख्य च तु द्वा तित्ति ध्याथ भोगास कृनिध तुव्यात् ॥ १६॥ नागा
धर्किभोग्यतित्ति स्यन चत्वारि वा प्रात्कर नाशित्ति ॥ दिनोदने हर्गन रूप १

१४४
 पुस्तकस्यै ७ वसुधै च त्वनमः ९० मिहो ॥ १७ ॥ तदेतद् १०० केन्द्रे तु यत्तु प्रकृत्या
 त्वागवत्सुखेति काव्यमिति प्रसिद्धं ॥ १८ ॥ ॥ इति श्रीपंचविंशतशारेभारतस्य
 तिकरशापचागनाधिकारोत्तितिये ॥ ३ ॥ भौतलर ७ आशुगुनाकता ४ सापु
 ननुविद्वान्विषमहिम ॥ मुक्ता ८८ शेषतस्तस्य ३०० निष्ठापक्षादिनि २२ सप्तमसुतस्य
 शिष्यस्य ॥ १ गुरुगुणाद्या ३ अगुगुणाद्या १ वेदाधि ४४ लब्धावर्जितश्चदिदाह ४ हतो
 आगुणा ३ नागपुस्तकमित्यसिद्धं शहितसक्रे १४ ॥ २ शानिप्रविद्वानवदमागलध
 आवाचितारमुदयस्यमव्या ॥ नवीतिजिवार्कजं नृतिप्रवाहनागवोसिद्धगतिनवेता ३

दिव्या १० वनो १७ नाखनगा ७० शाहनविमि ३ तगुजाकि कुजेत्पशिष्यस्य ॥ अथ
 ८०० पुप ०० मद्द ०० नम्रा ९०० चतु ४०० वशतामः पृथग्रहाष्ट ८०० नागतौत्य
 केन्द्राः रुद्रा ११ नवेन्द्र १९ हियमा २२ नवेन्द्र १९ रुद्रा ११ च भोग्याद्रवयुक्तहीन
 वना १७ जग ७ नागद वत ३ सुख्य १२ निष्ठादशो १० अताहिनधनं चतस्र्य ॥ ५५ प
 थस्यसिधो निकेन्द्र ४ द्वि ३ शशिप्रो नयुत फलस्यत् ॥ ग्रहाख्यसिधो नितकायदा
 स्याद् रोधने वा शर ५ पचाधिते यत्रविष्य ३ त्रैवकारयत् ॥ सप्तविनाकासि ३ ग
 त्यकुर्व्यात्तदातासिधु फलप्रसाध्यत् ॥ ७ ॥ भौतलर ७ आशुगुना ४ नगलप ७ देसा ११०

१४४

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीश्री उवाच ॥ ॥ प्रह्लाद नारद पराशर पुंडरीक व्यास वीरेश्वर शु
क सोनक श्रीसुका उवाच ॥ ॥ कर्माणि न कर्तुं न हि विभीषण द्या उता न ह परम भागवतानुसामि
॥ १ ॥ लोमहर्ष उवाच ॥ धर्मो विवर्ततेऽस्मिन् ऋषीणां कृतेऽपि न पापं प्रगादयति वृकोदर कीर्तने
न ॥ ॥ सुविनेशपतिर्धर्मं जयकीर्तनेन भास्वतु कथं यतान् भवति रागाः ॥ २ ॥ श्रीश्री उवा
च ॥ ये मातृश्राविगतराः सुपरापर ज्ञाना रायरा सुरगुरु सततं स्मरन्ति ॥ ॥ ध्याते न ते न हतं किल
विषं च तनास्त मातुः पयोधरं न पुनः पिबति ॥ ३ ॥ इति उवाच ॥ ॥ नारायण नाम नरेश
राणां प्रसिद्ध चौर काचित् पृथिव्या ॥ अनेकजन्मा जेत पापसं च यं हृत्पशेद स्मृतं ननु

मेव ॥ ४ ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ ॥ मेवम्यामैपातको शोया वासं श्रीव
गै ॥ पुण्योपेतपुंडरीकायताक्षं विष्णुं वेद सर्वलोके कनाथ ॥ ५ ॥ श्री
धमनासचाचराधरा विद्याराकोद्याखिल विश्वमूर्तिना ॥ समुद्र
मेखं संभ्रमं गवानप्रसदिनु ॥ ६ ॥ इति उवाच ॥ ॥ अचिंत्यमव्य
भा ॥ विश्व भावनं ॥ त्रैलोक्यं ॥ रविचारका कं हरीं प्रपन्न
न ॥ लज्जल उवाच ॥ यदिग ॥ कालपाशानुवद्धात
पादिकोटे ॥ ८ ॥ निलतमपि ॥ तच्चात चोतशत्मा मम भवतु

॥८॥ सहदेव उवाच ॥ यस्य यज्ञवराहस्य विष्णोरनुलते जसः ॥ प्रणामेयं प्रकुर्वन्ति ते वा
सपितमो नमः ॥९॥ कुंत्येवाच ॥ त्वकर्मफलं हि दृष्ट्वा यायायानि प्रजाम्पह ॥ तस्मीत
स्य हृषीकेश त्वयि भक्तिदृढास्त्वमेः ॥१०॥ माधुवाच ॥ कृष्णो तां कृष्णमनुस्मरन्ति गान्
चकृस्तुतस्तुतिताये ॥ तेभिर्ननु त्रविशन्ति कृष्णहविर्यथा मंत्रं हुतं हुताशे ॥११॥ शी
पधुवाच ॥ कीदृशं पक्षिभिरुगं गुराणि नृपेशाश्च मुनेष्वपि यत्र तत्र ॥ जा
तस्मै भवतु केशव त्वत्पशादाश्च ये वक्त्रि रचलाश्च भिन्नारिणाश्च ॥१२॥ सुभद्रोवाच ॥
एकोपि कृष्णस्य सकृत्पणमादशाश्च मेधावमृथेन तुलः ॥ दशाश्च मेधी पुनरेति जन्म कृ

ष्णप्रणामी तनर्भवाय ॥१३॥ अभि मनुहुवाच ॥ गोविंदगोविंदहृत्पुण्ड्रं गोविं
दमुकुटं कृष्णं ॥ गोविंदगोविंदं ध्यागपागो गोविंदगोविंदं न मात्स्येथाः ॥१४॥ धृष्ट
मनु उवाच ॥ श्रीगमतागयण वासुदेव गोविंदं वंदे मुकुटं कृष्णं ॥ श्रीकेशवानत
तु सिंहविष्णो मां चाहि संसारभुजं गृहं ॥१५॥ मात्स्यो कुरुवाच ॥ अप्रमेयह
विष्णो कृष्णदामोदराय नमः ॥ गोविंदानं तसर्वं शवा सुदेवनमस्तु ते ॥१६॥ उधव उवाच ॥
वासुदेव परित्यजे यो न्यंदं कुरुयासते ॥ तृविनो जाह्नवीतीरं कृपवरातिदुर्मते ॥ इति
श्रीमदुवाच ॥ अपासनीये शयनाशनस्थो दिवा च रात्रौ च यथाधिगता ॥ यय

क्षि किं चित्सु कृतं कृतं मया जनार्दनस्तेन कृतेन तु व्यतु ॥ १८ ॥ संजय उवाच ॥ ॥ आर्त्तविष
 णा शिथिलाश्चभीताघोरेषु व्यादादिवृत्तमाना ॥ संकीर्त्तनाय गणशब्दमात्रं विमुक्त
 दुःखासुरिव नो भवन्ति ॥ १९ ॥ अक्रु उवाच ॥ ॥ अहमस्मि नाय गणदा सदा सदा सस्य
 दा सस्य च दा सदा सः ॥ अत्येभ्य इ शो जगतो नराणां तस्मादहं धृत्य तं गेहमस्मि ॥ २० ॥ विदु
 रुवाच ॥ ॥ वासुदेवस्य ये भक्ताः शोतास्तु हतमानसाः ते वा दा सस्य दा सोहं भवेज्जन्मनि जन्म
 नि ॥ २१ ॥ भीष्म उवाच ॥ ॥ विपरिते युक्तास्तेषु परीक्षिते रोगेषु बधुषु ॥ ब्रह्मिणी रूपया विष्टो
 मारणा गतवत्सल ॥ २२ ॥ ये ये हताश्चैकधोरादेत्यात्रैतौ कथनाथेन जनार्दननेन ॥ ते ते गता
 देवा चार्जु उवाच ॥

विष्णुपुण्यप्रयाता को धोपि देवस्य वरेणा तुल्यः ॥ २३ ॥ कृपाचार्य उवाच ॥ ॥ सज्जन्मनफ
 लमिदं मधुकेतुभो मत्प्राथनीयमदनुग्रह एव एव ॥ त्वद्भक्त्यभक्त्यपूरिचारकभक्त्यभक्त्यभ
 त्यस्य भक्त्य इति मास्मि लोकनाथ ॥ २४ ॥ अस्वत्थानोवाच ॥ ॥ गाविंदके शयजना दित्वा
 सुदेवविश्वेशविश्वमधुसूदनविश्वरूप ॥ अप्रपन्नानपुरुषोत्तमपुष्पैराक्षनाय गणा
 युतानुसिंहतमो नमस्ते ॥ २५ ॥ कर्ण उवाच ॥ ॥ नात्यं वदामि न शृणोमि न चिंतयामि नात्यं
 स्मरामि न मजामि न चाश्रयामि ॥ भक्त्या त्वदीयचरणां वृजमादरेण श्रीश्रीनिवासपु
 रुषोत्तमदेहि दास्यं ॥ २६ ॥ धृष्टराष्ट्र उवाच ॥ ॥ नमो नमः कारुणा वामनाय नागयणा

यामिताविक्रमाय ॥ श्रीसाङ्ग चक्रा शीगादाधायनमोक्ततस्मै पुरुषोत्तमाय ॥ ३० ॥ गो
 धार्पुवाच ॥ ॥ त्वमेवमाता च पिता त्वमेव त्वमेव वैश्वसखा त्वमेव ॥ त्वमेव विद्याश्च विराट् त्व
 मेव त्वमेव सर्वं त्वमेव देव ॥ २८ ॥ दुर्ज्योतिर्वाच ॥ यज्ञेसा च्युतगो विंद माधवानंतके स
 व ॥ कृष्णविष्णो ह्येके शवासुदेवनमोस्तुते ॥ २९ ॥ जय इथ उवाच ॥ ॥ नमः कृष्णाय दे
 वाय ब्रह्मणे नतु शक्तये ॥ योगीश्वर्ययोगीयत्वामहं शरणागतः ॥ ३० ॥ विकर्ण उवाच ॥
 ॥ कृष्णाय वासुदेवाय देविके नंदनाय च ॥ नंदगोपकृष्णाय गोविंदाय नमो नमः ॥ ३१ ॥
 सुमंत उवाच ॥ ॥ नमः परमकल्पागतमस्तु विश्वभावन ॥ वासुदेवाय शांताय यदुनाप

तये नमः ॥ ३२ ॥ विण्ण उवाच ॥ ॥ नमो ब्रह्मण्य देवाय गोब्रह्मणा हिताय च ॥ जगद्धिता
 य कृष्णाय गोविंदाय नमो नमः ॥ ३३ ॥ शल्प उवाच ॥ ॥ अतस्तीपुष्यसंकासं पीतवास
 मच्युत ॥ येन तमस्येति गोविंदं न तेषां विद्यते भयं ॥ ३४ ॥ वलभद्र उवाच ॥ ॥ कृष्णक
 र्णकृष्णपातोत्पमगतीतांगतिर्भव ॥ संसाराणां वमगता नो प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ ३५ ॥ श्रीक
 र्ण उवाच ॥ ॥ कृष्णकृष्णोति कृष्णेति यो मास्मरति तत्पशुः ॥ जलभीत्या यथा पद्मं
 नृका दुर्धरा ॥ ३६ ॥ सत्यप्रवामि मनुजाः स्वयमूर्धवा ह्येनां मुकुदतरसि हजनाद्
 नेति ॥ जीवज यत्पतुदितं मरणा रोगापावाणाका एतद्दसाय ददाम्यभीष्टं ॥ ३७ ॥ इ

सह

॥ स ह्यनारायणो नृत्तुकापुमा कल्पशतत्रयः ॥ गंगादि सर्वतीर्थेषु ज्ञातो म
 वातपुत्रकः ॥ ३८ ॥ सूत उवाच ॥ ॥ तत्रैव गंगा जमुना च तत्रैव गोदावरी सिंधु सरस्वती च ॥ सु
 वा ॥ तैर्तीर्थानि वसंतितत्र यथा च्युतो हारकथा प्रसंगः ॥ यम उवाच ॥ ॥ नरके पच्यमाने
 नु यमनपरिभाषितं ॥ किं त्वयानार्चितो देवः केशवः केशनाशनः ॥ नारद उवाच ॥ ४० ॥ जन्मा
 तैरसहस्रेण तपोभ्यान् समाधिना ॥ नरैराणां क्षीणपापाणां हृद्भक्तैः प्रजायते ॥ ४१ ॥ प्रल्हाद
 उवाच ॥ ॥ नाथ यो निसहस्रेषु येषु येषु बुजाम्यहं ॥ तेषु ते स्वचला भक्तिरच्युताः सदा सदा
 त्वयि ॥ ४२ ॥ या प्रीतिरिवेकानां विषयेष्वनपापिनि ॥ तामनुस्मरतः स्वासित् हृदयान्नापमपेक्ष
 इक्षीपंचसिद्धातपादो गीताध्ववादीका मधुतीर्थोऽपध्याय ॥ २ ॥ ४३ ॥

४३ ॥ ॥ विश्वामित्र उवाच ॥ ॥ किंतु स्पृष्टानेः किंतीर्थैः किंतपोभिः किमर्थैः ॥ यो नि
 त्यध्यायते देवं नागयणमनन्यधिः ॥ ४४ ॥ जमदग्निरुवाच ॥ ॥ नित्योत्सवसदा तेष्वाति
 त्यजी नित्यमंगतं ॥ ये यौ हृदि स्थो भगवान्मंगलायतनौ हरिः ॥ ४५ ॥ भारद्वाज उवाच ॥
 ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कृतस्तेषां परजयः ॥ येषां निदिवा स्वप्नो हृदयस्थो जनाहृत
 ॥ ४६ ॥ गौतम उवाच ॥ ॥ गोकर्णदातृगृहगोबुकाशी प्रचारगोदककल्पवासि ॥ य
 रायुतं मेरुसुवर्णादानं गोविंदनाम स्मरणं न तुल्यं ॥ ४७ ॥ श्रीगणेश उवाच ॥ ॥ गोविंदेति
 सदा स्नानं गोविंदेति सदा जर्तनं ॥ गोविंदेति सदा ध्यानं सदा गोविंदकीर्तनं ॥ ४८ ॥ अ

धातु तस्य
 धातुः ॥ यो ते च न क्षरत ॥ ५० ॥ अच्युतः कल्पह ॥ ५१ ॥ अच्युतः कामधेनुव ॥ चिता मीमांस ॥ ५२ ॥
 ॥ ५३ ॥ हरिर्वाच ॥ ॥ जयतु जयतु देवो देवकीनेदनो यं जयतु ज
 यतु ॥ ५४ ॥ जयतु जयतु मेघश्यामलः कामलांगो जयतु जयतु पृथ्वी
 भारिनाशो मुकुन्द ॥ ५५ ॥ पिप्पलायन उवाच ॥ ॥ अमिन्नुमिह विभवे गरुडश्च जामुताय च
 यो प्रशमनाय भवो वधाय ॥ ५६ ॥ कृष्णाय च श्विकजलाग्निभुजैर्गङ्गाके शय्यमाय हरये गुरवे न
 मस्तु ॥ ५७ ॥ हविर्होत्रि उवाच ॥ ॥ कृष्णत्वदीयपदपङ्क्तौ जपि जगते अद्यो व मे विशतुमानसरा

नास्ति व
 जहंस ॥ प्राणा प्रयाणा समये कफवातपित्तैः कंठावरोधनावेधो स्मरणी कुतस्ते ॥ ५८ ॥ वि
 दुरुवाच ॥ ॥ हरेर्नामैव नामैव नामैव मम जीवनं ॥ कलौ नास्त्येव नास्त्येव गतिरपथा ॥
 ५९ ॥ वशिष्ठ उवाच ॥ कृष्णेति मीगर्तनामयस्मवाची प्रवृत्तिः ॥ भस्मीभवति तस्या शुभा
 हापातककोटयः ॥ ६० ॥ अरुधत्पुवाच ॥ ॥ कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने ॥ प्रणत
 क्लेशनाशाय गोविन्दाय नमो नमः ॥ ६१ ॥ कस्य पुत्र उवाच ॥ ॥ कृष्णोऽस्मरणादेव पाप
 मीघातपैर्गुरो ॥ शतधा भेदमाप्नोति गिरिविजुहोत यथा ॥ ६२ ॥ दुर्योधन उवाच ॥ ॥ जा
 नामि धर्मतत्त्वमप्रवृत्तिर्जानामि पापं तत्त्वमिदं निवृत्तिः ॥ केनापि देवेन हृदि स्थितं त

पथातिवृत्तौस्मितथाकरोमि॥यत्रस्वगुणोदोषेणक्षमतामधुसूचन॥अहमेवमहं हंतुंम
 मदोवोदयोपते॥पृथान्गुरुवाच॥नामेवतवगोविंदनामतत्त्वशताधिकं॥ददातु
 भुक्तिर्विनाप्यहं गयागुतः॥६०॥लोमश उवाच॥नमामितारायणापादपंकजं कंठामि नो
 मराप्रजनं सदा॥वदामितारायणातामतिमलं स्मरामितारायणातत्त्वमव्ययं॥६१॥स्तन
 क उवाच॥॥स्मृते सवालकल्याणं भाजनं यत्र जायते॥पुरुषं तमजं नित्यं वृजामिशर
 णं हारं॥६२॥गाण्ड उवाच॥॥नारायणं ते मंत्रोक्तिं वागस्तैव शिवं त्रिनी॥तथा हि नृप
 कं धारं विपत्तौ तिमहद्भुतं॥दालभ्य उवाच॥॥किंतस्य बहुभिर्मंत्रैर्भक्तियस्य जना हृतो॥

स्मृति

स्मृति श्रीसर्वोपद्राज्ञा

तमो नारायणायेति मंत्र सर्वार्थसाधकः॥६३॥वेशं पायत उवाच॥॥यत्र योगेश्वरः कृ
 ष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः॥तत्र श्रीविजयो भुक्तिं कुर्यान्नीतिर्गतिर्मम॥६४॥अंगीश उवाच॥॥
 हरिहरतिपापाणि दुष्टचिन्तैरपि स्मृतः॥अनिष्टयापि संस्पृष्टो रहत्येव हि पावकः॥६५॥
 पराशर उवाच॥॥सह दुश्चरितं येन हरिरित्यक्षरद्वयं॥बद्धः परिकरत्तेन मोक्षाय गमनं प्र
 ति॥६६॥पोलस्त्य उवाच॥हे जिह्वे रससारं जेसर्वदामधुराप्रिये॥नारायणाख्यपि सूर्यपि
 वनिह्वेति रं नरं॥६७॥व्यास उवाच॥सत्यं सत्यं पुनः सत्यं भुजमुत्थाये चोच्यते॥न वेशा च
 परं शास्त्रं न देवो केशवात्परः॥६८॥धन्वतरि उवाच॥॥अच्युता तं दगोविंदनामा च

२२
रणाभेसजं ॥ नरपतिसकलां रोगान् सत्पुंसत्पुं वदाम्यहं ॥ ७० ॥ मार्कण्डेय उवाच ॥
साहसिस्तं महद्दिंडं सा चान्वजडमूकता ॥ यत्सु हृत्तं क्षेणं वापि वासुदेवं नाचिंतयन् ॥
७१ ॥ अगस्त्य उवाच ॥ ॥ निमिषं निमिषाद्वाप्राणिनां विष्णुचिंतनं ॥ कृतं क
टि महत्प्राणी धीनमेकं विशिष्यते ॥ ७२ ॥ वामदे उवाच ॥ ॥ मनसा कर्मणा वाचो ये
रतिजनादिन ॥ तत्र तत्र कुरुक्षेत्रं प्रयागो नैमिषवनं ॥ ७३ ॥ भुक्त उवाच ॥ ॥ अ
हं सर्वशास्त्राणि विचार्य च पुनः पुनः ॥ इदमेकं समुत्पन्नं ध्येयं नाशयामासदा ॥ ७४ ॥
श्रीमहादेव उवाच ॥ ॥ शरिराणि न वदितुं व्याधिदुःखकलेव ॥ औषधं जानववी

तो यै वैद्यो नाशय नो हरिः ॥ ७५ ॥ शौनका उवाच ॥ ॥ भोजनाच्छादने चित्तावृथा कुर्वीत वै
ह्नवाः ॥ यो मोक्षिष्वं भर्तुं देवः स किमभक्तानपेक्षते ॥ ७६ ॥ सर्वप्रह्लादयो देवाः अथ यश्च तपो
धनाः ॥ कीर्तयति सुरैश्च देवं ता रायणी विभुः ॥ ७७ ॥ सनत्कुमार उवाच ॥ ॥ यस्य हस्त
गदा चक्रं गरुडो यस्य वाहनं ॥ शरयः करतले यस्य समे विष्णुः प्रसीदतु ॥ ७८ ॥ इदं पवित्रमा
युष्यं पुराणपापं प्रणाशने ॥ यपठेत्प्रातरुत्थाय वैष्णवं स्तोत्रमुत्तमं ॥ ७९ ॥ सर्वपापविना
मुक्तो विष्णुमायुष्यमाप्नुयात् ॥ धर्माधिक्यममोक्षार्थं पांडवे परिकीर्तितं ॥ ८० ॥ इति
द्वौ गता समाप्तम् ॥ ॥ शुभ १८१८ सालको

२३
स्वास्तिश्री गणेशाय नमः ॥ श्री ब्रह्माय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ १ ॥
शंकराय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

जं ॥ माहात्म्यं कृष्णदीर्घं चूम्मुकेतं नमो गौरीपुत्रगणेशाय नमः ॥
५ ॥ नमो गौरीभक्तमालात्पूजितं नमो गौरीभक्तमालात्पूजितं नमः ॥
६ ॥ नमो गौरीभक्तमालात्पूजितं नमो गौरीभक्तमालात्पूजितं नमः ॥
७ ॥ नमो गौरीभक्तमालात्पूजितं नमो गौरीभक्तमालात्पूजितं नमः ॥





28

22



22

23

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript. The text is arranged in approximately 12 horizontal lines. The script is dense and appears to be a form of Sanskrit or a related language. The paper is aged and shows some staining.

Vertical text on the right margin of the top page, possibly a title or a reference. It is written in a similar script to the main text.

Handwritten text in Devanagari script, likely a manuscript. The text is arranged in approximately 8 horizontal lines. The script is dense and appears to be a form of Sanskrit or a related language. The paper is aged and shows some staining.

Vertical text on the left margin of the bottom page, possibly a title or a reference. It is written in a similar script to the main text.



॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥
 ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 ॥ द्रुपद उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥
 ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥ ॥ श्रीकृष्ण उवाच ॥

~~॥ श्रीगणेशाय नमः ॥~~

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्रीकृष्णाय नमः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

[illegible][illegible]

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १२ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १३ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १४ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १५ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १६ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १७ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १८ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १९ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वदा ॥ २ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वपापहर्त्रा ॥ ३ ॥
सर्वकलहहर्त्रा सर्ववैद्य ॥ ४ ॥
सर्वभयहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ५ ॥
सर्वपापहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ६ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ७ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ८ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ ९ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ११ ॥
सर्वभूतहितं कुरु सर्वदा ॥ १२ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वपापहर्त्रा ॥ १३ ॥
सर्वकलहहर्त्रा सर्ववैद्य ॥ १४ ॥
सर्वभयहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १५ ॥
सर्वपापहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १६ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १७ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १८ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ १९ ॥
सर्वदुःखहर्त्रा सर्वदुःखहर्त्रा ॥ २० ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible][illegible]





ॐ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ नमः शिवाय ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥